पाठ 18

तरह–तरह के घर

अपने आस–पास के मकानों को देखो। कुछ मकान कच्चे तो कुछ पक्के होंगे। कुछ मकान एक मंजिला तो कुछ बहुमंजिले। इन मकानों को बनाने में कई प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती है। कई मकान महलों की तरह बड़े आकर्षक बनाए जाते हैं।

सोचिए और बताइए

- अपने आस–पास के मकानों को देखिए और बताइए कि इन मकानों को बनाने में किस–किस सामग्री का उपयोग हुआ है ?
- ये सामग्री आपके यहाँ कहाँ–कहाँ मिलती है ?
- इन मकानों की छतें किस प्रकार की है ?
- आपके मकान को बनाने में कौनसी सामग्री का उपयोग किया गया है ?
- आपका मकान आपको सर्दी, गर्मी व बरसात से कैसे बचाता है ?
- आपके मकान में शुद्ध हवा व रोशनी की क्या सुविधाएँ हैं?

मकान कच्चा या पक्का, कैसा भी हो, उसमें शुद्ध हवा व रोशनी पर्याप्त मात्रा में मिलती रहनी चाहिए। जिससे हमारा स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। अपने विद्यालय का भवन देखिए। उसमें दरवाजे व खिड़कियाँ आमने– सामने होंगी। जिससे रोशनी के साथ–साथ शुद्ध हवा का आवागमन होता रहता है।

रेगिस्तानी क्षेत्र को मकान | हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी के मकान | बहुमंजिला मकान

चित्र 18.1 अलग–अलग तरह के मकान

शिक्षक निर्देश – विद्यालय भवन व आस–पास किसी मकान का अवलोकन करा कर अवधारणा का विकास करें।

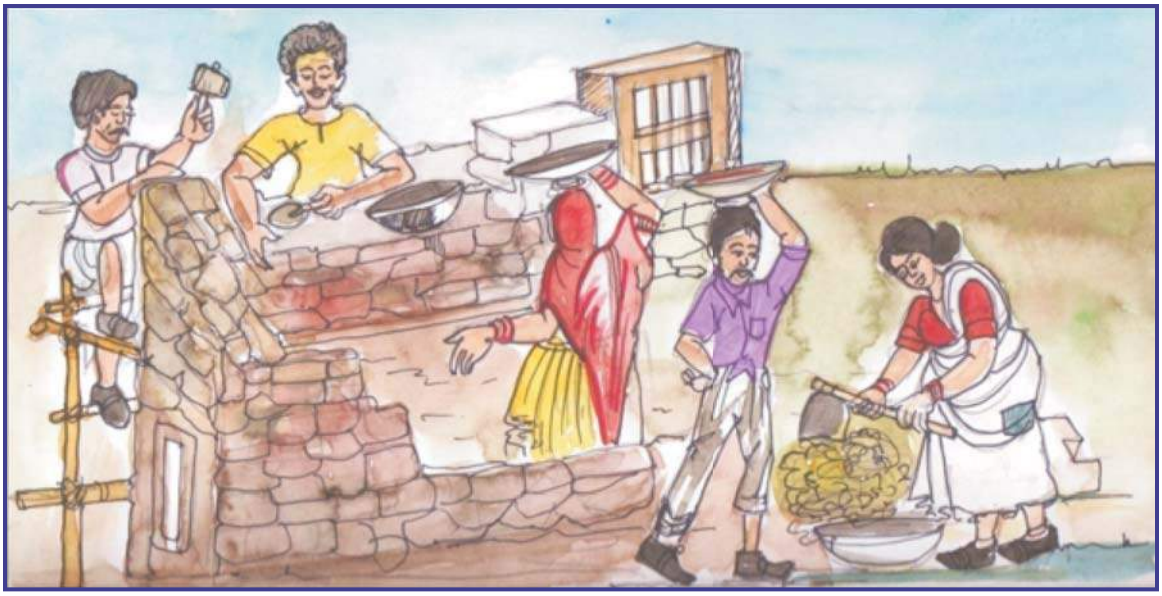

चित्र 18.2 भवन निर्माण करते हुए कारीगर एवं श्रमिक

सोचिए और बताइए

- कुछ मकानों की छतें कवेलू (खपरेल) और बाँस की बनी होती है। इन मकानों में रहने वालों को क्या सुविधा रहती है ?
- रेगिस्तानी इलाकों में धूल भरी आंधियाँ चलती है, ऐसे में ढालू छतें किस प्रकार मदद करती है ?
- मकान बनाने के लिए कौन–कौनसी सामग्री आपके क्षेत्र में मिलती है व कौन–सी सामग्री दूसरे क्षेत्रों से आपके यहाँ आती है ?

जिन स्थानों पर पत्थर आसानी से मिल जाते हैं, वहाँ मकान की दीवारें व छतें भी पत्थरों की बनाई जाती है। जहाँ पत्थर नहीं मिलते वहाँ मिट्टी व ईंटों की दीवारें बनायी जाती है। आजकल लोहे के सरियों के ढाँचे में सीमेंट व कंकरीट डालकर भी छतें बनाई जाती है। जिसे आर.सी.सी. की छत कहते हैं। जंगलों के आस–पास व पहाड़ी इलाकों में पेड़–पौधे अधिक होने से मकान बनाने में लकड़ियों का अधिक उपयोग होता है।

आजकल कुछ लोग रोजगार के लिए गाँवों से शहर की ओर पलायन करते हैं। जिससे शहरों में जमीन कम और लोग अधिक हो जाते हैं। लेकिन रहने को मकान सभी को चाहिए। अतः मकान पास–पास बनाए जाते हैं। इसी कारण बड़े शहरो में बहुमंजिला मकान भी बनाने पड़ते हैं। दिए गए चित्र में बहुमंजिला मकान भी दिखाया गया है। इसमें मकान की छत एक ही होती है। इसी प्रकार सीढ़ियों व लिफ्ट का उपयोग सामूहिक रूप से किया जाता है।

सोचिए और बताइए

- कुछ लोग गाँव से शहर में आकर क्यों रहते होंगे?
- शहर में बहुमंजिला मकान क्यों बनाए जाते हैं?
- शहर में जमीन की कमी का भवनों के आकार और विस्तार पर क्या प्रभाव दिखाई देता है?
- बहुमंजिला मकान में रहने वाले लोगों को क्या सुविधा रहती होगी?
- बहुमंजिला मकान में सभी मकानों की एक ही छत होती है, वे सभी एक छत का उपयोग किस प्रकार करते होंगे ?

सभी सुविधाओं से युक्त मकान बनाने के लिए अधिक पैसा खर्च करना पड़ता है। लोग मकान अपनी आवश्यकता एवं क्षमतानुसार बनाते हैं। तभी तो कुछ मकान छोटे–बड़े तो कुछ कच्चे–पक्के होते हैं। सरकार द्वारा भी सुविधायुक्त मकान बनाकर दिए गए हैं। जिसका भुगतान हमें छोटी–छोटी किश्तों में करना होता है। इस प्रकार सभी को अपनी आवश्यकता व क्षमतानुसार मकान मिल जाता है। हमारे राज्य में राजस्थान हाउसिंग बोर्ड इस प्रकार के मकान बना कर देता है।

सोचिए और चर्चा कीजिए

- घर हमारी मूलभूत आवश्यकता है। जिसके पास खुद का घर नहीं होता है। वे क्या करते हैं?

सामूहिक घर (रैन बसेरा)

सरकार बेघर लोगों के लिए रैन बसेरों की व्यवस्था करती है, जहाँ उन्हें जरूरी सुविधाएँ जैसे पीने का साफ पानी, पहनने के कपड़े, ओढ़ने–बिछाने के कपड़े, सामान रखने के लिए अलमारी, शौचालय, प्राथमिक उपचार, मनोरंजन के साधन जैसे टेलीविजन आदि निःशुल्क उपलब्ध होते हैं। बेघर लोगों के लिए बनाए गए इन रैन बसेरों को पूरे वर्ष चौबीसों घंटे खुला रखा जाता है। रैन बसेरे सार्वजनिक स्थानों जैसे– बस अड्डे, रेल्वे स्टेशन आदि के पास बनाए जाते हैं।

पता कीजिए और बताइए

- आपके आस–पास कहीं रैन बसेरा हो तो पता करो कि क्या लोग उसका उपयोग कर रहे हैं ?
- वहाँ क्या–क्या सुविधाएँ हैं ?
- आपके क्षेत्र में कौन–कौनसी जगह या भवन है? जिसका उपयोग सभी करते हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के मकान

हमारे देश भारत में भौगोलिक विविधता पायी जाती है। जैसे– कहीं बड़े–बड़े पहाड़ हैं तो कहीं विशाल मैदान हैं। कहीं वर्षा अधिक होती है, तो कहीं मरूस्थल है। अलग–अलग क्षेत्रों में वहाँ के मौसम के अनुसार मकान भी अलग–अलग प्रकार के होते हैं। आओ, देखें कुछ विशेष प्रकार के मकान –

समुद्रतटीय क्षेत्रों के मकान

भारत का मानचित्र देखिए, इसके तीन ओर समुद्र हैं। अतः हमारे देश के कई शहर व गाँव समुद्र तट पर बसे हैं। समुद्र के पानी में ऊँची–ऊँची लहरें उठती हैं। समुद्री तूफान भी आते हैं। यहाँ कभी–कभी बरसात अधिक होने से बाढ़ भी आ जाती है। नीचे ऐसे ही समुद्रतट के किसी गाँव के घर का चित्र दिया है–

चित्र 18.3 समुद्र तटीय घर

देखिए और लिखिए

- यहाँ मकान की दीवारें मिट्टी की बनी हो तो क्या होगा?
- इन मकानों को बनाने में लकड़ी का प्रयोग अधिक क्यों हुआ है?
- हमारे आस–पास जंगल कम हो रहे हैं। अतः मकान बनाने में लकड़ी के स्थान पर क्या–क्या सामग्री काम में ली जा सकती है?

पहाड़ी क्षेत्रों के मकान

हमारे देश के राज्य जैसे– हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर आदि पहाड़ी क्षेत्रों वाले राज्य हैं। यहाँ बर्फ अधिक गिरती है। यहाँ के मकानों की छतें भी ढलान वाली होती हैं।

चित्र 18.4 पहाड़ी क्षेत्रों के मकान

देखिए और बताइए

- यहाँ घर की छत ढ़लवा क्यों बनाई गई है?
- ये मकान हमें सर्दी से कैसे बचाते हैं ?
- भारत के मानचित्र में जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, केरल, तमिलनाडु राज्य को ढूँढो।

बर्फ के मकान (इग्लू)

अभी आपने देखा कि मकान बनाने में पत्थर,मिट्टी, लकड़ी, लोहा आदि सामग्री का उपयोग किया जाता है। लेकिन दुनिया में कुछ जगह ऐसी भी है। जहाँ ये सामग्री आस–पास कहीं भी नहीं मिलती है। वहाँ चारों ओर सिर्फ बर्फ ही बर्फ होती है। वहाँ बहुत कम लोग रहते हैं। जो रहते हैं वे भी बर्फ के घर बनाकर। नीचे एक बर्फ से बने मकान का चित्र देखिए, इसे इग्लू कहते है।

चित्र 18.5 बर्फ का घर

हमने सीखा

- मकान बनाने में अलग–अलग सामग्री की आवश्यकता रहती है।
- मकान मौसम, आवश्यकता व क्षमतानुसार अलग–अलग प्रकार के होते हैं।
- रैन बसेरा बेघर लोगों के अस्थायी आवास है।

जाना–समझा, अब बताइए

- आपके मकान में दीवारें बनाने में कौन–कौनसी सामग्री का उपयोग हुआ है?
- हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहे इसके लिए मकान में क्या–क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
- आपके आस–पास के क्षेत्र में किसी को मकान बनाना है तो उसे किस प्रकार की सामग्री का उपयोग करना चाहिए और क्यों ?
- अपने सपनों के घर का वर्णन कीजिए।
- अखबार में किसी बहुमंजिला मकान का विज्ञापन देखिए। इसका चित्र काटकर अपनी कॉपी में लगाइए। उसमें दी जा रही सुविधाएँ अपनी कॉपी में लिखिए।

घर हमें सर्दी, गर्मी व बरसात से बचाते हैं।
तरह–तरह के होते, पर अपना फर्ज निभाते हैं।।